वर्ष–3, अंक–12, जनवरी–मार्च, 2016

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक
आग्नेय

सदानीरा
विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध.

एक वर्ष में चार बार प्रकाशित
यह अंक : जनवरी, फरवरी, मार्च-2016
मूल्य- 100 रुपये, वार्षिक 400 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 500 रुपये
विदेश के लिए : वार्षिक 25 डालर

वार्षिक शुल्क सदानीरा के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट या
मनीऑर्डर या नेट बैंकिंग से भेजें.

Current A/c : Sadaneera-118411023949
IFSC : BKDN0811184

अंक रजिस्टर्ड डाक से.

सम्पादकीय सम्पर्क :

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 0755-2424126,
मो.- 093031-39295, 094244-10139
ई-मेल- **agneya@hotmail.com**

प्रकाशक :

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फ़ोन- 0755-2555789
मो.- 094250-11789
ई-मेल- **pahalepahal@gmail.com**

अनुक्रम

- सम्पादक की ओर से 05

कवि का गद्य

युवा कवियो, सब कुछ पढ़ियो/ **एडम ज़गायेव्स्की** 09

माँ की आँखें/ **ताद्यूष रोज़ेविच** 14

पोलिश कविता

मार्चिन श्वयेत्लित्स्की/ अनुवाद **: कमीला युनीक-लुन्येव्स्का** 19

स्पेनिश कविता

खोसे लुईस मोरान्ते/ अनुवाद **: पूजा अनिल** 24

ख़ाइमे साबिनेस/ अनुवाद **: गीत चतुर्वेदी** 32

इतालवी कविता

आल्दा मेरीनी/ अनुवाद **: सरिता शर्मा** 45

बंगाली कविता

अनिंद्य चाकी/ अनुवाद **: अमृता बेरा** 53

शुभाशीष भादुड़ी/ अनुवाद **: अमृता बेरा** 58

मराठी कविता

जुई कुलकणी 63

एकाग्र : हा जिन

हा जिन/ टिप्पणी **: गीत चतुर्वेदी** 68

समाज और प्रवक्ता/ व्याख्यान 70

कविताएँ 86

स्कॉटिश कविता : विलियम नील हर्बर्ट

साक्षात्कार/ मूल बांग्ला **: सुतपा सेनगुप्त**/
अनुवाद **: रामशंकर द्विवेदी** 92

कविताएँ/ अनुवाद **: रामशंकर द्विवेदी** 105

कवि का प्रेम

नेरूदा और मातील्दा : एक प्रेमकथा/ गीत चतुर्वेदी 111

असमिया कविता

हरेकृष्ण डेका/ अनुवाद **: पापोरी गोस्वामी** 117

एकाग्र : सौरभ राय

कविताएँ 123

सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा/ निबन्ध 136

बचपन और कविताएँ/ कविता–कार्यशाला 142

हिन्दी कविता

लवली गोस्वामी 160

प्रेमरंजन अनिमेष 170

सुरेन्द्र रघुवंशी 200

- **अवदान** 217
- **विक्रय स्थल** 219

कविता की सत्ता

यदि कविता जीवन की तरह निरन्तर परिवर्तनशील है, तब यह मानना युक्तिसंगत नहीं होगा कि किसी भी समय की कोई कविता किसी प्रकार के रीतिवाद के प्रपंच में फँस जाती है। कविता तभी तक कविता बनी रह सकती है, जब तक वह विषय और शिल्प, साथ में भाषा के स्तर पर प्रतिकार, प्रतिरोध, प्रतिपक्षता और द्वन्द्व की स्थिति में रची जाती है। उसमें निषेध के निषेध की क्षमता भी अन्तर्निहित है। कविता में किसी भी नीति–रीति का अस्वीकार करके उसे जड़ता और अगति से दूर रखा जाता है और उसकी विविधता और निरन्तरता को बचाया जाता है। कविता सतत् सलिला है। उसकी नियति डबरे बन जाने की नहीं है। किसी कालखण्ड में समकालीनता के किसी सन्दर्भ में कविता को रीतिबद्ध नहीं किया जा सकता और न किसी एक परिपाटी या लकीर पर चलाया जा सकता है। जो रीतिबद्ध हो जाता है, जो परिपाटी पर चलने लगता है और जो लकीर पीटने लगता है और जो अपनी संरचना में जड़ बन जाता है, वह कविता नहीं होती है, वह कविता का कंकाल होता है, कविता का केंचुल होता है जिसे आलोचक कविता समझने की भूल कर बैठते हैं।